AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | Open Accsess & Indexed
Volume 04 | Issue 01 | January 2023 | www.agpegondwanajournal.co.in | Page No. 37-41

वीरांगना रानी अवंती बाई और मंडला क्षेत्र में स्वतंत्रता संग्राम

डॉ. मंजू मारिया सालोमन
विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग
सेंट. अलोयसियेस स्वशासी महाविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश

भारत की धरा पर अनेक ऐसे वीर- वीरांगनाओं का जन्म हुआ जिन्होंने सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम से लेकर संपूर्ण स्वाधीनता संघर्ष में अग्रणी भूमिका का निर्वहन किया, किंतु उनका अमूल्य योगदान आज भी काल के गर्भ में दफन है । स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य पर आज आपको अवगत कराते हैं एक ऐसी ही वीरांगना से जिन्होंने उस दौर में अंग्रेजों से लोहा लिया, जब महिलाएं राजनीति से अनभिज्ञ थीं। महाकौशल क्षेत्र में स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख सूत्रधार रहीं वीरांगना अवंती बाई आजादी की लड़ाई में मंडला क्षेत्र का बहुत बड़ा योगदान है, जिसकी जानकारियां लोगों के सामने नहीं आई. महाकौशल क्षेत्र में आजादी की क्रांति में मंडला की अग्रणी भूमिका रही है, इसकी शुरु आत देखा जाए तो रानी अवंती बाई के नेतृत्व में रामगढ़ (डिंडौरी) से शरू हुई थी.सबसे पहले आजादी का सपना उन्होंने ही देखा और आजादी के शंखनाद में महत्यपूर्ण योगदान दिया.

तलवार बाजी और घुड़सवारी

रानी अवंती बाई का जन्म 16 अगस्त, 1831 को मध्य प्रदेश के सिवनी जिले के मनकेहणी ग्राम में हुआ था। इनके पिता राव जुझार सिंह 187 गांवों के जमींदार थे। अवंती बाई की संपूर्ण शिक्षा घर पर ही हुई । रानी अवंती बाई ने अपने बचपन से ही तलवार बाज घुड़सवारी इत्यादि कलाएं सीख ली थी बाल्य काल से ही वीर व साहसी इस वीरांगना की जैसे-जैसे आयु बढ़ती गई उनकी वीरता और शौर्य की चर्चाएं भी बढ़ने लगी कम आयु में ही वह युद्ध कौशल में पूर्ण रूपेण दक्ष हो गई थीं।

इसी बीच पिता जुझार सिंह ने रानी अवंती बाई के विवाह का प्रस्ताव अपने सजातीय रामगढ़, मण्डला के राजपूत

CORRESPONDING AUTHOR:	REVIEW ARTICLE
Dr. Manju Maria Solomon HOD Dept. of History, St. Aloysius College (Autonomous) Jabalpur, Madhya Pradesh. Email: his.sac@gmail.com	

राजा लक्ष्मण सिंह के पुत्र राज कुमार विक्रमादित्य सिंह के लिए भेजा जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकारा. विवाह के बाद रानी अवंती बाई सिवनी छोड रामगढ़ , मंडला की कुल वधु हो गई. लेकिन विवाह के कुछ वर्षों के भीतर ही सन् 1850 में राजा लक्ष्मण सिंह का स्वर्गवास हो गया. राजा लक्ष्मण सिंह 1817 से 1850 तक रामगढ़ के शासक थे सन् 1850 में राजा लक्ष्मण सिंह के निधन के बाद राजकुमार विक्रमादित्य ने राजगद्दी संभाली रानी अवंती बाई रामगढ़ के दुर्ग में अपने दो पुत्रों अमान सिंह और शेर सिंह के साथ सुखी जीवन व्यापन कर रहे थे. लेकिन यकायक थोड़े समयावधि के बाद ही विक्रमादित्य सिंह का स्वास्थ्य भी क्षीण होने लगा और कुछ वर्षों के भीतर ही उनकी भी मौत हो गई. अब दोनों छोटे राज कुमारों के साथ प्रजा के संरक्षण की जिम्मेदारी रानी अवंती बाई के ऊपर आ गई।

लार्ड डल हौजी हड़प नीति -रामगढ़

एक ओर रामगढ़ और रानी अवंती बाई इस समय एक ओर इन विषम परिस्थितियों से दो-दो हाथ कर रहे थे, तो वहीं पूरे देश में लार्ड डलहौजी हड़प नीति के जरिये तेजी से साम्राज्य विस्तार कर रहा था. लार्ड डलहोजी की राजे रजवाड़ों को हडपने की नीति जिसे व्यपगत का सिद्धांत या डलहोजी की हड़प नीति कहा गया , जिसके कारण सतारा जैतपुर संभलपुर बघाट उदयपुर नागपुर झाँसी सहित कई देशी रियासतों का अंग्रेजी साम्राज्य में विलय कर दिया गया और अन्य रियासतों को हड़पने का अंग्रजी कुचक्र देश जोर-सोर से चल रहा था। अंग्रजों के इस कुचक्र का राजे रजवाड़ों ने विरोध किया उसकी कुदृष्टि अब रानी के रामगढ़ पर थी लेकिन रानी किसी भी कीमत पर अपनी स्वाधीनता का सौदा नहीं करना चाहती थी लेकिन अपनी हड़पनीति से कानपुर, झांसी, नागपुर, सतारा समेत कई अन्य रियासतों को हड़प् चुके डलहौजी ने अब रामगढ को अपना निशाना बनाया और पूरी रियासत को ष्कोर्ट ऑफ वार्ड्स के अधीन कर लिया. अब रामगढ़ का राज परिवार अंग्रेजी सरकार की पेंशन पर आश्रित हो गया था. लेकिन बेब सरानी महज अपमान का घूंट पीकर सही समय की प्रतीक्षा करने लगी और यह मौका हाथ आया 1857 की क्रांति में, जब पूरा देश अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र क्रांति का बिगुल फूंक चुका था सन 1857 में जब देश में स्वतंत्रता संग्राम छिड़ा तो क्रान्तिकारियों का सन्देश रामगढ भी पहुंचा। रानी तो अंग्रेजों से पहले से ही जली भुनी बैठी थी क्योंकि उनका राज्य भी झांसी और अन्य राज्यों की तरह कोर्ट कर लिया गया था और अंग्रेज रेजिमेंट उन के समस्त कार्यों पर निगाह रखे हुई थी।

रानी अवंतिबाई और राजाओं का क्रांति के लिए सम्मलेन-

लार्ड डलहोजी की राजे रजवाड़ों को हडपने की नीति जिसे 'व्यपगत का सिद्धांत' या ' डलहोजी की हड़प नीति' कहा गया , जिसके कारन सतारा, जैतपुर, संभलपुर, बघाट , उदयपुर ,नागपुर, झाँसी सहित कई देशी रियासतों का अंग्रजी साम्राज्य में विलय कर दिया गया और अन्य रियासतों को हडपने का अंग्रजी कुचक्र देश जोर-सोर से चल रहा था द्य अंग्रजों के इस कुचक्र का राजे रजवाड़ों ने विरोध किया , जिसका रानी अवन्तीबाई ने भी विरोध किया । पुरवा में आस-पास के राजाओं और जमीदारों का विशाल सम्मलेन बुलाया जिसकी अध्यक्षता 70 वर्षीय गोंड राजा शंकर शाह ने की द्य राजा शंकर शाह को मध्य भारत में क्रांती का नेता चुना गया। इस सम्मलेन में प्रचार प्रसार का कार्य रानी अवंतीबाई को सोंपा गया द्य प्रचार के लिए एक पत्र और दो काली चूड़ियों की एक पुड़िया बनाकर प्रसाद के रूप में

वितरित की गईं। इसके पत्र में लिखा गया - अंगेजों से संघर्ष के लिए तैयार रहो या चूड़ियाँ पहनकर घर बैठो तुम्हें धर्म ईमान के सौगंध है जो इस कागज का सही पता बैरी को दो। जो राजा,जमींदार और मालगुजार पुड़िया ले तो इसका अर्थ क्रांति में अंग्रेजों के विरुद्ध अपना समर्थन देना था।

रानी अवंति बाई और 1857 की क्रांति -

1857 की क्रांति महाकौशल तक फैल चुकी थी गढ़ा मंडला के शासक शंकर शाह ने विद्रोह के लिए विजयादशमी का दिन निश्चित किया पूरे महाकौशल में विद्रोह फैलने लगा और गुप्त सभाओं और प्रसाद की पूड़ियों का वितरण चलता रहा 18 सितम्बर को अंग्रेजों ने गोंड राजा शंकर शाह शाह और उनके पुत्र राजकुमार रघुनाथ शाह को जबलपुर में अलग-अलग तोपों से बांधकर उड़ा दिया द्य इसका राजाओं और जमीदारों ने व्यापक विरोध किया विद्रोह में शहपुरा के लोधी जागीरदार विजय सिंह और मुकास के खुमान सिंह गोंड, हीरापुर के मेहरबान सिंह लोधी एवं देवी सिंह शाहपुर के मालगुजार ठाकुर जगत सिंह, एवं सुकरी -बरगी के ठाकुर बहादुर सिंह लोधी शामिल थे। इनके अतिरिक्त विजयराघवगढ के राजा सरयू प्रसाद, कोठी निगवानी के ताल्लुकदार बलभद्र सिंह, सोहागपुर के जागीरदार गरूल सिंह विद्रोह में शामिल हुये। रामगढ के सेनापति ने भुआ बिछिया थाने पर चढाई कर दी और उसे अपने कब्जे में ले लिया द्यरानी अवन्तीबाई के सिपाहियों ने घुघरी पर कब्जा कर लिया। विद्रोहियों ने मंडला नारायणगंज मार्ग को बंद कर दिया जिससे जबलपुर से आने वाली अंग्रजों की टुकड़ी का मार्ग बंद हो गया और इस प्रकार विद्रोह पुरे मंडला और रामगढ में फैल गया अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर वाडिंग्टन इस विद्रोह को दबाने में असफल रहा।

अंग्रेजों के खिलाफ शुरू हुई लड़ाई

सभी देश भक्त राजाओं और जमींदारों ने रानी के साहस और शौर्य की बड़ी सराहना की और उनकी योजनानुसार अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का झंडा खड़ा कर दिया। जगह-जगह गुप्त सभाएं कर देश में सर्वत्रक्रान्ति की ज्वाला फैलादी। इस बीच कुछ विश्वासघाती लोगों की वजह से रानी के प्रमुख सहयोगी नेताओं को अंग्रेजों द्वारा मत्यु-दंड दे दिया गया। रानी इससे काफी दुखी हुईं। रानी ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और रानी ने अपने राज्य से कोर्ट ऑफ वार्ड्स के अधिकारियों को भगा दिया और राज्य एवं क्रान्ति की बागडोर अपने हाथों में ले ली। ऐसे में वीरांगना महारानी अवंती बाई लोधी मध्य भारत की क्रान्ति की प्रमुख नेता के रूप् में उभरी। रानी के विद्रोह की खबर जबलपुर के कमिश्नर को दी गई तो वह आग बबूला हो उठा।उसने रानी को आदेश दिया कि वह मण्डला के डिप्टी कलेक्टर से भेंट कर लें। अंग्रेज पदाधिकारियों से मिलने की बजाय रानी ने युद्ध की तैयारी शुरू कर दी।

रानी का नेतृत्व

उसने रामगढ़ के किले की मरम्मत कराकर उसे और मजबूत एवं सुदृढ़ बनवाया। मध्य भारत के विद्रोही नेता रानी के नेतृत्व में एक जुट होने लगे। अंग्रेज रानी और मध्य भारत के इस विद्रोह से चिंतित हो उठे। वीरांगना अवंती बाई लोधी ने अपने साथियों के सहयोग से हमला बोलकर घुघरी, रामनगर, बिछिया इत्यादि क्षेत्रों से अंग्रेजी राज का सफाया कर

दिया। इसके पश्चात्रानी ने मण्डला पर आक्रमण करने का निर्णय लिया। इस युध्द में वीरांगना अवंती बाई लोधी की मजबूत क्रान्तिकारी सेना और अंग्रेजी सेना में जोरदार मुठभेड़ें हुई। इस युद्ध में अंग्रेजों को धूल चटा दी गई।

अवंति बाई और ग्राम खैरी (मंडला) की लड़ाई -

इस समय तक मंडला नगर को छोड़कर पूरा जिला अंग्रेजों से मुक्त हो चुका था। 23 नवम्बर 1857 को मंडला के पास ग्राम खैरी के में अंग्रेजों और रानी अवन्तीबाई के बीच युद्ध हुआ जिसमें शाहपुरा और मुकास के जमीदारों ने रानी का सांथ दिया द्य इस युद्ध में मंडला का अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर वाडिंग्टन पूरी शक्ति लगाने के बाद भी कुछ ना कर सका और मंडला छोड़ सिवनी भाग गया इस प्रकार पूरा मंडला और रामगढ़ स्वतंत्र हो गया इस प्रकार पूरा मंडला जिला और रामगढ़ राज्य स्वतंत्र हो गया।

अंग्रेजों का रानी अवंतिबाई के किले रामगढ़ पर हमला-

अंग्रेज अपनी हार से बौखलाए हुये थे और अपनी हार का बदला लेना चाहते थे। अंग्रेज लगातार अपनी शक्ति सहेजते रहे अंग्रेजों ने 15 जनवरी 1858 को घुघरी पर नियंत्रण कर लिया और मार्च 1858 के दूसरे सप्ताह में रीवानरेशकीसहायतासे रामगढ को घेर लिया और रामगढ़ पर हमला बोल दिया द्य वीरांगना रानी अवन्तीबाई की सेना जो अंग्रेजों की सेना की तुलना में बहुत छोटी थी फिर भी साहस पूर्वक अंग्रेजों का सामना किया द्य रानी ने परिस्थितियों को भांपते हुये अपने किले से निकलकर डिंडोरी के पास देवहारगढ़ की पहडियों की ओर प्रस्थान किया।

रानी के रामगढ़ छोड़ देने के बाद अंगे्रजी सेना ने रामगढ़ के किले बुरी तरह ध्वस्त कर दिया और खूब लूटपाट की। इसके बाद अंग्रेजी सेना रानी का पता लगाती हुई देव हारगढ़ की पहाडियों के निकट पहुंची, यहाँ पर रानी ने अपने सैनिकों के साथ पहले से ही मोर्चा जमा रखा था। अंग्रेजो ने रानी के पास आत्मसमर्पण का सन्देश भिजवाया, लेकिन रानी ने सन्देश को अस्वीकार करते हुए सन्देश भिजवाया कि लड़ते-लड़ते बेशक मरना पड़े लेकिन अंग्रेजों के भार से दबूंगी नहीं।

बलिदान

इसके बाद वडिंगटन ने चारों तरफ से रानी की सेना पर धावा बोला। कई दिनों तकरानी की सेना और अंग्रेजी सेना में युध्द चलता रहा जिसमे रीवा नरेश की सेना अंग्रेजों का पहले से ही साथ दे रही थी। रानी की सेना बेशक थोड़ी सी थी लेकिन युध्द में अंग्रेजी सेना की चूलें हिलाके रख दी थी। इस युध्द में रानी की सेना के कई सैनिक हतायत हुए और रानी को खुद बाएं हाथ में गोली लगी, और बन्दूक छूटकर गिर गयी। अपने आपको चारों ओर से घिरता देख वीरांगना अवंती बाई लोधी ने रानी दुर्गावती का स्मरण करके अपनी ही तलवार से स्वयं के प्राण मातृभूमि के रक्षार्थ अर्पण कर दिए। कारण, उनका मानना था कि भारतीय स्त्री को जीते जी को ईशत्रु स्पर्श न कर सके। मृत्यु से पूर्व उन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों के नाम एक पत्र छोड़ा, जिसमें लिखा था कि इस विद्रोह के लिए मैं जिम्मेदार हूँ। मैंने ही सैनिकों को भड़काकर युद्ध के लिए प्रेरित किया। वे स्वयं विद्रोही नहीं बने। रानी के इस पत्र की मंशा यह थी कि उनकी मृत्यु के पश्चात

अंग्रेज उनकी प्रजा को भयंकर यातनाएं न दें। धन्य है ऐसी वीरांगना जिसने राष्ट्रहित में अपने प्राणों की आहुति दे दी साथ ही राष्ट्र की मातृशक्तियों को यह संदेश दिया कि विपरीत परिस्थितियों में भी कैसे अपने आत्मबल को जागृत करके अपनी मातृभूमि की रक्षा की जा सकती है।

रानी अवन्ती बाई लोधी एक धीर-गंभीर, वीर एवम साहसी शासिका थी। उनमे एक प्रशासक एवम सेनापति के श्रेस्ठ गुण थे। अपने नेतृत्व के गुणों के कारन ही वे शंकर शाह एवम रघुनाथ शाह की शहादत के पशचात जबलपुर परिचेत्र में क्रांति की वैकल्पिक नेत्री के रूप में उभरी और उन्होंने रामगढ़ एवम मंडला को अंग्रेजी राज से मुक्त कराकर ब्रिटिश राज को कठिन चुनौती पेश की उन्होंने चार महीने तक मंडला पर शासन किया ।

सन्दर्भ

१. हुकुम सिंह देशरजन अमर शहीद वीरांगना रानी अवन्ती बाई,अलीगढ,१९९४

२. भरत मिश्र,१८५७ की क्रांति और उसके प्रमुख क्रन्तिकारी

३ .सुरेश मिश्र,रामगढ की रानी अवन्तीबाई भोपाल,२००४

४. थम्मन सिंह सरस

५. सुशील भाती१८५७ की जन क्रांति के जनक धन सिंह कोतवाल,मेरठ 2002

६. डब्लू.सी.,अस्कोइन,नेरेटिव ऑफ़ इवेंट्सन अतेंडिंग द आउट ब्रेक और डिस्टर्बएनस एंड डी रेस्टोरेशन ऑफ़ अथॉरिटी इन द सागर एंड नर्बदा टेरिटरीज ईन 1857,कंटिका

७.जबलपुर गजेतियेर,१९७२

८. विकिपीडिया

९ . https://www.dindori.co.in/2019/02/rani-avanti-bai.html

■ ■ ■